

1. What is federalism?

संघवाद (Federalism) एक ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें सत्ता संवैधानिक रूप से केंद्रीय सरकार और क्षेत्रीय इकाइयों (जैसे राज्यों) के बीच विभाजित होती है, जिससे प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से शासन कर सकता है, जबकि साझा मुद्दों पर वे मिलकर कार्य करते हैं। भारत में, संविधान के अनुच्छेद 1 में कहा गया है कि "इंडिया, यानी भारत, राज्यों का एक संघ होगा"।

2. What do you mean by single citizenship?

एकल नागरिकता (Single Citizenship) का अर्थ है कि किसी व्यक्ति को केवल देश की नागरिकता प्राप्त होती है, न कि किसी राज्य या क्षेत्रीय इकाई की भी। भारत में, व्यक्ति को केवल भारतीय नागरिकता प्राप्त होती है, न कि किसी विशेष राज्य की नागरिकता।

3. What are the Directive Principles of the State Policy?

राज्य के नीति निदेशक तत्व (Directive Principles of State Policy - DPSP) भारतीय संविधान में उल्लिखित दिशा-निर्देश या सिद्धांत हैं जो राज्य को कानून बनाते समय और नीतियां निर्धारित करते समय ध्यान में रखने चाहिए। इनका उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करना और एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है. 

4. What is meant by Secularism in the constitution of India?

भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता (Secularism) का अर्थ है कि राज्य का कोई अपना धर्म नहीं होगा और वह सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखेगा। यह सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है और किसी भी धर्म के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करता है. 

5. What is meant by constitution?

संविधान (Constitution) नियमों और सिद्धांतों का एक लिखित या अलिखित समूह है जो किसी राज्य या संगठन के शासन का आधार बनता है। यह सरकार की संरचना, शक्तियों और सीमाओं को परिभाषित करता है, साथ ही नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों को भी निर्धारित करता है.

6. What do you mean by Objective proposal?

उद्देश्य प्रस्ताव (Objective Proposal) एक ऐतिहासिक प्रस्ताव था जिसे जवाहरलाल नेहरू ने 1946 में संविधान सभा में प्रस्तुत किया था। इसमें स्वतंत्र भारत के संविधान के मूल दर्शन और मूल्यों को रेखांकित किया गया था, और बाद में यह भारतीय संविधान की प्रस्तावना का आधार बना.

7. What is Universal Adult Franchise?

सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (Universal Adult Franchise) का अर्थ है कि एक निश्चित आयु से ऊपर के सभी वयस्क नागरिकों को, बिना किसी लिंग, जाति, धर्म, शिक्षा या संपत्ति के भेदभाव के, मतदान करने का अधिकार है. 

8. What do you mean by Right to Equality?

समानता का अधिकार (Right to Equality) भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों में से एक है जो यह सुनिश्चित करता है कि कानून के समक्ष सभी व्यक्ति समान हैं और किसी भी नागरिक के साथ धर्म, जाति, लिंग, जन्म स्थान या नस्ल के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा. 

9. What is Liberty?

स्वतंत्रता (Liberty) का अर्थ है व्यक्ति को अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने और कार्य करने की स्वतंत्रता, जब तक कि वह दूसरों की स्वतंत्रता या अधिकारों का उल्लंघन न करे। इसमें विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता शामिल है. 

10. What is Parliamentary form of government?

संसदीय शासन प्रणाली (Parliamentary form of government) एक ऐसी प्रणाली है जिसमें कार्यपालिका (सरकार) विधायिका (संसद) के प्रति जवाबदेह होती है। इसमें सरकार का मुखिया (प्रधानमंत्री) विधायिका का सदस्य होता है और उसे बहुमत का समर्थन प्राप्त होना चाहिए.

11. What is meant by Rule of law?

विधि का शासन (Rule of law) एक सिद्धांत है जिसमें कहा गया है कि किसी देश में सभी व्यक्ति, चाहे वे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, कानून के अधीन हैं और कानून सभी पर समान रूप से लागू होता है। इसका अर्थ है कि सरकार भी कानून के दायरे में रहकर कार्य करती है.

26. आपातकालीन प्रावधान भारत के संघीय ढांचे को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान, भारत का संघीय ढांचा एकात्मक ढांचे में बदल जाता है, जहां केंद्र सरकार राज्यों के प्रशासन को निर्देशित करने की शक्ति रखती है।

स्पष्टीकरण:

- **शक्ति का केंद्रीकरण:** आपातकालीन प्रावधान, विशेष रूप से राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352), केंद्र सरकार को विधायी और कार्यकारी कार्यों सहित राज्य के मामलों पर नियंत्रण रखने की अनुमति देता है।
- **राज्य की स्वायत्तता में कमी:** राष्ट्रपति, केंद्रीय मंत्रिमंडल की सलाह पर, किसी भी राज्य को निर्देश जारी कर सकते हैं, जिससे सत्ता का केंद्रीकरण हो जाएगा और राज्य सरकारों की स्वायत्तता में कमी आएगी।
- **वित्तीय नियंत्रण:** राष्ट्रपति को केंद्र और राज्यों के बीच राजस्व के वितरण को संशोधित करने का अधिकार भी प्राप्त है, जिससे केंद्र से राज्यों को वित्तीय हस्तांतरण को कम या रद्द किया जा सकता है।

27. लोक सभा की संरचना एवं कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: लोकसभा जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित प्रतिनिधियों से बनी होती है और मुख्य रूप से कानून निर्माण और वित्तीय मामलों के लिए जिम्मेदार विधायी निकाय के रूप में कार्य करती है।

स्पष्टीकरण:

- **संरचना:** लोकसभा में भारत भर के प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों से सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार द्वारा सीधे निर्वाचित सदस्य होते हैं।
- **कार्य:** इसके प्राथमिक कार्यों में कानून बनाना, प्रश्नों और प्रस्तावों जैसे विभिन्न तंत्रों के माध्यम से कार्यपालिका को नियंत्रित करना, केंद्रीय बजट को मंजूरी देना और संवैधानिक संशोधन शुरू करना शामिल है।

28. राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारत के राष्ट्रपति के पास तीन प्रकार की आपातकालीन शक्तियां हैं: राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352), राज्य आपातकाल या राष्ट्रपति शासन (अनुच्छेद 356), और वित्तीय आपातकाल (अनुच्छेद 360)।

स्पष्टीकरण:

- **राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352):** युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में घोषित किया जाता है, जिससे सत्ता का केंद्र सरकार के पास केंद्रीकरण हो जाता है।
- **राज्य आपातकाल (राष्ट्रपति शासन - अनुच्छेद 356):** यह तब लगाया जाता है जब किसी राज्य में संवैधानिक तंत्र ध्वस्त हो जाता है, जिससे राष्ट्रपति को राज्य का प्रशासन अपने हाथ में लेने की अनुमति मिल जाती है।
- **वित्तीय आपातकाल (अनुच्छेद 360):** भारत की वित्तीय स्थिरता या ऋण को खतरा पैदा करने वाली स्थितियों में घोषित किया जाता है, जिससे केंद्र सरकार राज्यों को वित्तीय निर्देश जारी कर सकती है।

29. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारतीय राजनीतिक प्रणाली की विशेषता है संसदीय शासन प्रणाली, एकात्मक पूर्वाग्रह वाला संघीय ढांचा, धर्मनिरपेक्ष राज्य और स्वतंत्र न्यायपालिका।

स्पष्टीकरण:

- **संसदीय प्रणाली:** भारत वेस्टमिंस्टर शैली की संसदीय प्रणाली का पालन करता है, जहां कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है।
- **एकात्मक पूर्वाग्रह वाली संघीय प्रणाली:** संरचना में संघीय होने के बावजूद, संविधान आपातकालीन स्थितियों या विशिष्ट परिस्थितियों में एकात्मक प्रणाली की ओर बदलाव की अनुमति देता है।
- **धर्मनिरपेक्ष राज्य:** भारतीय संविधान धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है और यह सुनिश्चित करता है कि राज्य में कोई धर्म नहीं होगा।
- **स्वतंत्र न्यायपालिका:** न्यायपालिका संविधान के संरक्षक के रूप में कार्य करती है और न्याय सुनिश्चित करती है।

30. न्यायपालिका की भूमिका स्पष्ट कीजिए।



उत्तर: भारत में न्यायपालिका कानून के शासन को बनाए रखने, संविधान की व्याख्या करने और नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



स्पष्टीकरण:



- **संविधान का संरक्षक:** न्यायपालिका यह सुनिश्चित करती है कि कानून संविधान के अनुरूप हों तथा असंवैधानिक कानूनों को अमान्य घोषित कर सकती है।
- **न्याय प्रदाता:** यह व्यक्तियों के बीच, व्यक्तियों और राज्य के बीच, तथा राज्यों के बीच या केंद्र और राज्यों के बीच विवादों का समाधान करता है।
- **मौलिक अधिकारों का रक्षक:** न्यायिक समीक्षा और रिट जैसे तंत्रों के माध्यम से न्यायपालिका संविधान में निहित मौलिक अधिकारों की रक्षा करती है।

31. भारत में मौलिक अधिकारों का वर्णन करें और इसके महत्व का उल्लेख करें।

उत्तर: मौलिक अधिकार भारतीय संविधान द्वारा सभी नागरिकों को गारंटीकृत बुनियादी मानव अधिकारों का एक समूह है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

स्पष्टीकरण:

- **विवरण:** संविधान के भाग III में निहित इन अधिकारों में समानता, शोषण के विरुद्ध स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार तथा संवैधानिक उपचारों का अधिकार शामिल हैं।
- **महत्व:** ये व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं, राज्य के अतिक्रमण को रोकते हैं, तथा मानव गरिमा की रक्षा और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए एक ढांचा प्रदान करके न्यायसंगत और समतामूलक समाज सुनिश्चित करते हैं।

32. राज्यपाल के अधिकारों और कर्तव्यों पर चर्चा करें।

उत्तर: राज्यपाल राज्य के संवैधानिक प्रमुख के रूप में कार्य करता है, जिसके पास कार्यकारी, विधायी और विवेकाधीन शक्तियां होती हैं, और उसका कर्तव्य संविधान और कानून को संरक्षित, सुरक्षित और बचाव करना होता है।

स्पष्टीकरण:

- **अधिकार/शक्तियाँ:** इसमें मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद की नियुक्ति, राज्य विधानमंडल को बुलाना/स्थगित करना/भंग करना, विधेयकों को मंजूरी देना और कुछ स्थितियों में विवेकाधीन शक्तियों का प्रयोग करना शामिल है।
- **कर्तव्य:** राज्य और केंद्र के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करना, यह सुनिश्चित करना कि राज्य की संवैधानिक मशीनरी ठीक से काम कर रही है, तथा संवैधानिक विफलता की स्थिति में राष्ट्रपति को रिपोर्ट करना।

33. राज्य सभा की विधायी शक्तियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारतीय संसद के ऊपरी सदन के रूप में राज्य सभा के पास महत्वपूर्ण विधायी शक्तियां हैं, विशेष रूप से राज्य प्रतिनिधित्व और राज्य सूचियों से संबंधित विशेष शक्तियों के मामले में।

स्पष्टीकरण:

- **साधारण विधान:** यह साधारण विधेयकों को पारित करने में लोकसभा के साथ विधायी शक्तियों को साझा करता है, जिसके लिए दोनों सदनों की सहमति की आवश्यकता होती है।
- **विशेष शक्तियां:** इसमें नई अखिल भारतीय सेवाओं के सृजन और राज्य सूची में किसी विषय को राष्ट्रीय महत्व का घोषित करने के संबंध में विशेष शक्तियां हैं (अनुच्छेद 249)।
- **संवैधानिक संशोधन:** यह संविधान में संशोधन की प्रक्रिया में भाग लेता है, ऐसे संशोधनों के लिए विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है।